2

कोविड-19 महामारी के बाद ऑनलाइन पूर्व-प्राथमिक शिक्षा अपेक्षाएँ, चुनौतियाँ और समाधान

सविता कौशल*

इस लेख में पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की प्रक्रिया और विशेष रूप से पूर्व-प्राथमिक बच्चों, उनके शिक्षकों और उनके माता-पिता की भागीदारी पर कोविड-19 महामारी के प्रभाव को जानने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध में दिल्ली के दक्षिण पूर्व जिले और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) के पूर्व-प्राथमिक कक्षा वाले दस स्कूलों का सर्वेक्षण किया गया था। दो श्रेणियों यानि कि 5 सार्वजनिक और 5 निजी पूर्व-प्राथमिक कक्षा वाले स्कूलों का चयन किया गया था। दिल्ली के इन स्कूलों के 103 पूर्व-प्राथमिक शिक्षकों और 92 अभिभावकों द्वारा भरे गए गूगल फॉर्म के द्वारा जानकारी एकत्र की गई। जिसमें से 20 पूर्व-प्राथमिक शिक्षकों और 20 अभिभावकों का साक्षात्कार भी लिया गया था। साक्षात्कार के दौरान पूर्व-प्राथमिक बच्चों के शिक्षकों और अभिभावकों को महामारी के दौरान अपने अनुभवों को प्रतिबिंबित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इसके अलावा, कई ऑनलाइन पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं का भी अवलोकन किया गया। इस शोध के द्वारा यह तलाशने की कोशिश की गई जैसे कि कोविड-19 का पूर्व-प्राथमिक बच्चों के सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं पर क्या प्रभाव पड़ा? कोविड-19 महामारी के परिणामस्वरूप पूर्व-प्राथमिक शिक्षकों को किन मुख्य मुद्दों से जूझना पड़ा? कोविड-19 महामारी के परिणामस्वरूप माता-पिता और परिवारों के सामने सबसे अधिक दबाव वाली चुनौतियाँ क्या थीं?

पिछले दो सालों में कोविड-19 महामारी ने दुनिया भर में काफी आशंकाओं को जन्म दिया। कोविड-19 के प्रकोप की गंभीरता को देखते हुए मार्च 2020 में सार्वजनिक परिवहन की कमी के साथ-साथ शैक्षणिक संस्थान को अस्थायी रूप से बंद करने जैसे कठोर उपाय किए गए। इस महामारी द्वारा निर्मित अप्रत्याशित वैश्विक संदर्भ के परिणामस्वरूप, शैक्षिक अस्पष्टता, अस्थिरता और परिवर्तन हुआ। इन परिवर्तन प्रक्रियाओं से यह कोशिश की गई कि सभी छात्रों को घर में रहकर भी शैक्षिक गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त हो सके। विद्यालयों ने यह भी प्रयास किया कि यह पूरी ऑनलाइन शिक्षण प्रक्रिया अपनी छाप और स्वीकार्यता छोड़े।

* *एसोसिएट प्रोफेसर,* शिक्षक प्रशिक्षण और अनौपचारिक शिक्षा विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली

किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि इन उपायों को लंबे समय तक बढ़ाया जाएगा। सभी शैक्षणिक संस्थानों के साथ-साथ शिक्षकों को विशेष रूप से ऐसी परिवर्तन प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण हिस्सा निभाना पड़ा, जिसमें उन्हें ऑनलाइन पढ़ाने की विधा के लिए कुछ प्रयास करने पड़े। कुछ शैक्षणिक संस्थानों ने अध्यापकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम भी आयोजित किए।

यह शोध पत्र एक ऐसे शोध अध्ययन पर आधारित है जिसमें कोविड-19 महामारी और पूर्व-प्राथमिक शिक्षा पर इसके प्रभाव, विशेष रूप से पूर्व-प्राथमिक बच्चों, उनके शिक्षकों और इस प्रक्रिया में उनके परिवारों की भागीदारी का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। इस संबंध में, इसके द्वारा संबोधित शोध प्रश्न इस प्रकार हैं— कोविड-19 ने पूर्व-प्राथमिक बच्चों की शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया को कैसे प्रभावित किया? कोविड-19 महामारी के परिणामस्वरूप पूर्व-प्राथमिक शिक्षकों को किन प्राथमिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा? कोविड-19 महामारी के परिणामस्वरूप बच्चों के माता-पिता और परिवारों को किन मुख्य चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

अध्ययन का औचित्य

संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन के प्रकाशन में यह बताया गया है कि "राष्ट्रव्यापी शैक्षिक संस्थानों की बंदी ने विश्व की 60 प्रतिशत से अधिक छात्र जनसंख्या को प्रभावित किया है (यूनेस्को, 2020)। बहुत सारे दूसरे देशों में भी अन्य कारणों से शैक्षिक संस्थानों की बंदी की वजह से शिक्षार्थियों को परेशानी न हुई। इसके अलावा, "सोशल डिस्टेंस" और "ऑनलाइन लर्निंग" से शैक्षिक वातावरण के प्रति छात्रों की धारणा पूरी तरह से बदल गई है (अरोड़ा और अन्य, 2021; राकिक और अन्य, 2020; शीन और अन्य, 2020))। कोविड-19 के कारण हुई शैक्षिक तबाही ने शिक्षकों को डिजिटल तकनीक को पढ़ाने और सीखने के लिए उपयोग में लाने के लिए मजबूर किया, भले ही उनके पास समकालीन प्रौद्योगिकी से संबंधित विश्वसनीयता और प्रथाओं के बारे में ज्ञान हो या ना हो। सबसे अधिक बार सीखने की प्रक्रिया में बाधा डालने वाले कारक— सत्रों के संचालन के दौरान प्रतिभागियों की संख्या, सत्रों की समय सीमा और तकनीकी दोषों की सीमा है (चेंग और लैम, 2021; केकोजेविक और अन्य, 2020)। कोविड-19 के शुरुआती चरण में, छात्रों को वर्चुअल लर्निंग में मुश्किल हुई (गैलो और अन्य, 2020; कुमार और अन्य, 2020), लेकिन बाद में ऑनलाइन सीखने के आदी हो गए (स्निप्स और ट्रैन, 2017)।

कोविड-19 महामारी का दुनिया भर में बच्चों की शिक्षा और विशेष रूप से भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में बच्चों की शिक्षा पर गहरा प्रभाव किया है। मार्च 2020 में कोविड-19 महामारी ने स्कूली शिक्षा प्रक्रिया को रोक दिया क्योंकि स्कूलों को अचानक बंद कर दिया गया था। इस महामारी से स्कूली शिक्षा की प्रक्रिया को एक तरह से विराम लग गया और भारतीय संदर्भ में शिक्षा के प्रावधान, पहुँच से संबंधित प्रश्न नए सिरे से सबके सामने उभर

कर आए। भारत में पूर्व-प्राथमिक शिक्षा क्षेत्र पर अनिश्चितता आ रही थी। कोविड-19 महामारी ने शिक्षकों को अपने लैपटॉप और स्मार्टफोन के माध्यम से डिजिटल और ऑनलाइन संसाधनों के माध्यम से शिक्षाशास्त्र के संदर्भ में लीक से हटकर सोचने के लिए मजबूर किया। इन संसाधनों ने घर पर बच्चों को सीखने की सुविधा प्रदान की, ऑनलाइन पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं बच्चों के पहले कुछ दिन, उनके कई शिक्षकों और बच्चों के माता-पिता के लिए नई चुनौतियों से भरे हुए थे। मुख्य कारण बच्चों तक पहुँचने का एक नया तरीका था जो कि शुरुआत में शिक्षकों और बच्चों के माता-पिता को कुछ जटिल लगा।

यह शोध पत्र भारत में पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के परिदृश्य पर कोविड-19 महामारी के प्रभाव का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह विशेष रूप से प्रौद्योगिकी के उपयोग के संदर्भ में शिक्षकों और अभिभावकों द्वारा की गई पहल पर केंद्रित है। यह इन हितधारकों के सामने आने वाली चुनौतियों और इस दौरान बच्चों को प्रदान किए गए सीखने के अवसरों की जाँच करता है। यह शोध लेख एक गुणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिसने दिल्ली और इसके राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में सरकारी और निजी-पूर्व-प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों और बच्चों के माता पिता के सामने आने वाली चुनौतियों को जानने का प्रयास किया गया है। पूर्व-प्राथमिक शिक्षा में शिक्षकों के द्वारा अपनाई गईं रणनीतियाँ जैसे कि तकनीकी हस्तक्षेप के बारे में भी प्रयास किया गया है।

अनुसंधान पद्धति

इस शोध के लिए दिल्ली के दक्षिण-पूर्व जिले और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) के दस पूर्व-प्राथमिक कक्षा वाले स्कूलों का सर्वेक्षण किया गया था। दो श्रेणियों यानी सार्वजनिक और निजी स्कूलों में से प्रत्येक के अध्ययन के लिए पाँच-पाँच स्कूलों का चयन किया गया था। दिल्ली के इन स्कूलों के 103 पूर्व-प्राथमिक शिक्षकों और 92 अभिभावकों द्वारा भरे गए गूगल फॉर्म के द्वारा जानकारी एकत्र की गई थी। अध्ययन के हिस्से के रूप में इनमें से 20 पूर्व-प्राथमिक शिक्षकों और 20 अभिभावकों का साक्षात्कार भी लिया। ऑनलाइन शिक्षा के कार्यान्वयन में शिक्षक एवं अभिभावक किस प्रकार की समस्याओं का सामना करते हैं, जानना बहुत जरूरी था। इस परिस्थिति में किए गए प्रयासों को अभिभावकों, शिक्षकों की दृष्टि से परखने तथा उसका आकलन करने की दृष्टि से इस शोध को किया गया।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षकों और अभिभावकों को महामारी की अवधि के दौरान अपने शिक्षण पर विचारों को प्रतिबिंबित करने के लिए कहा गया था। इसके अलावा कुछ ऑनलाइन कक्षाएँ भी देखी गईं। उनके प्रतिबिंबों में विवरण, भावनाएँ, अनुभव, विश्लेषण या वर्तमान परिदृश्य में सुधार के लिए योजनाएँ शामिल थीं। इसमें निम्नलिखित चरण शामिल थे—

1. वर्णन करें कि क्या हुआ?
2. अनुभव के बारे में क्या अच्छा या बुरा था, इस पर टिप्पणी करें?
3. बताएँ कि आपने स्थिति से क्या समझा?
4. और क्या किया जा सकता है, इस पर सुझाव दें?
5. बताएँ कि आप भविष्य में क्या अलग करना चाहेंगे?

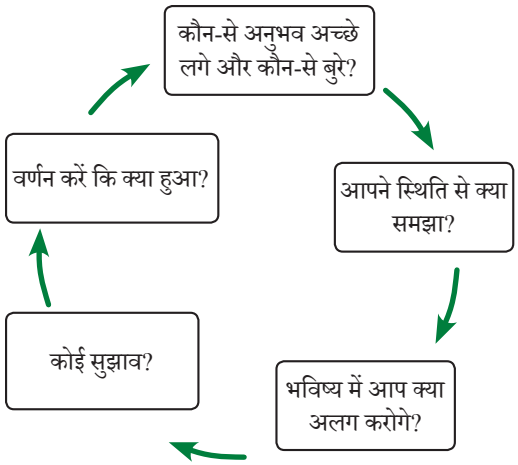

अध्यापकों और अभिभावकों के प्रतिबिंब

शिक्षकों के अनुभव

कुछ अवसर

अधिकांश शिक्षकों (97 प्रतिशत) ने कहा कि शुरुआत में उन्हें ऑनलाइन शिक्षण विधि नहीं आती थी। वे लोग ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म से परिचित नहीं थे। शिक्षकों के लिए डिजिटल सामग्री बनाने और प्रभावी ढंग से ऑनलाइन शिक्षण देना आम चुनौती थी। उन्होंने ओपन-सोर्स प्लेटफॉर्म को भी इस्तेमाल करने की कोशिश की, लेकिन आश्वस्त नहीं थे। उन्हें ऑनलाइन शिक्षण का अपर्याप्त ज्ञान था, लेकिन लॉकडाउन के कारण, उन्होंने ऑनलाइन शिक्षण के लिए इन स्रोतों का उपयोग सीखा। कुछ शिक्षक (18 प्रतिशत) उनके स्कूल की संस्थागत समर्थित प्रौद्योगिकियों के कारण बेहतर स्थिति में थे। इन शिक्षकों को ऑनलाइन शिक्षण का अच्छा ज्ञान था और इसे कुशलतापूर्वक निष्पादित किया। सर्वेक्षण में शामिल 82 प्रतिशत शिक्षक यह भी महसूस करते हैं कि कुछ समय में उन्होंने काफी कुछ सीखा और अब वे ऑनलाइन शिक्षण में सहज हैं।

ऑनलाइन कक्षाओं में बच्चों की उपस्थिति बढ़ाने के लिए 70 प्रतिशत स्कूलों में माता-पिता के साथ ऑनलाइन बैठकें आयोजित की गईं। स्कूलों ने फोन के द्वारा संदेश भेजकर, टेलीफोन और अन्य माध्यमों से अभिभावकों से संपर्क किया, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे ऑनलाइन बैठकों में शामिल हों। कक्षाओं में ऑनलाइन गतिविधियों ने साथियों के बीच बात करने के लिए विचारों और सृजित अवसरों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया। इन गतिविधियों के दौरान छात्रों को बातचीत करने का अवसर दिया गया। माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्य भी पूर्व-प्राथमिक बच्चों के शिक्षण से जुड़ पाए।

कुछ चुनौतियाँ

22 प्रतिशत शिक्षकों ने ऑनलाइन शिक्षण में दो चुनौतियाँ बताईं, यह थीं— मूल्याँकन प्रक्रिया करना और पाठ्यक्रम को समय से पूरा करना। हालाँकि, इन शिक्षकों का यह भी कहना था कि व्यक्तिगत स्तर पर उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा—

बाहरी हस्तक्षेप

कुछ शिक्षकों (45 प्रतिशत) को बहुत से बाहरी विकर्षणों का सामना करना पड़ा, जैसे कि दरवाजे की घंटी बजना, पड़ोसियों, नौकरानी-नौकरों, पालतू जानवरों, वाहनों और आगंतुकों द्वारा किए गए शोर। शिक्षण सामग्री और वितरण की तैयारी के दौरान निरंतरता और दक्षता प्रभावित हुई, क्योंकि शिक्षकों को घर पर परेशानी का सामना करना पड़ा।

पारिवारिक हस्तक्षेप

कुछ शिक्षकों (35 प्रतिशत) को घर में जगह सीमित होने के कारण काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। परिवार में अन्य सदस्यों और बच्चों से बहुत अधिक ध्यान भंग होता है, परिवार के सदस्यों के बीच बातचीत, परिवार के सदस्य मौखिक रूप से, ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान, शिक्षक के पास कुछ तुच्छ मुद्दों के बारे में बात करते हैं, जैसे कि बच्चे की उपस्थिति जरूर लगा देना। इसके परिणामस्वरूप कक्षाओं में अवांछित विराम हुआ और शिक्षण में बाधा उत्पन्न हुई।

कंप्यूटर स्क्रीन पर ध्यान केंद्रित करने में असमर्थता

कई शिक्षकों (27 प्रतिशत) के लिए ऑनलाइन सीखने के सबसे कठिन पहलुओं में से एक बच्चों की चुनौती को संभालना था, क्योंकि कई बच्चों ने लंबे समय तक स्क्रीन पर ध्यान केंद्रित करने में असमर्थता दिखाई। ऑनलाइन सीखते समय सोशल मीडिया या अन्य वेबसाइटों से बच्चों का ध्यान भटकता था। नतीजतन, शिक्षकों को अपने ऑनलाइन पाठों को इस तरह से बनाए रखना पड़ा कि वे बच्चों को कक्षा में केंद्रित रखने के लिए संक्षिप्त बातचीत, रोचक तरीके भी अपनाते थे, जिनमें उनका ध्यान बाँधने के लिए बीच में कुछ मुद्दों पर प्रश्न पूछे जाते थे।

डिजिटल विभाजन और शिक्षण में समावेश

45 प्रतिशत माता-पिता ने भी बच्चों को ऑनलाइन शिक्षा दिलाने में उनके सामने आने वाली चुनौतियों की सूचना दी, जिनमें हैं— (1) इंटरनेट कनेक्शन न होना— 10 प्रतिशत (2) डाटा वहन करने में असमर्थ होना— 15 प्रतिशत (3) इंटरनेट की गति/सिग्नल अनुकूल न होना— 20 प्रतिशत (4) सीमित स्मार्टफोन होना— 22 प्रतिशत (5) स्मार्टफोन न होना— 10 प्रतिशत और (6) ऑनलाइन प्लेटफार्म को इस्तेमाल करने में अकुशलता— 15 प्रतिशत। शिक्षा में निवेश करने के लिए परिवारों की क्षमता ने स्कूल बंद होने के दौरान शिक्षा तक पहुँचने की उनकी क्षमता को निर्धारित किया, लगभग 24 प्रतिशत स्मार्टफोन की खरीद के साथ, और 38 प्रतिशत ने महामारी के दौरान अन्य शैक्षिक सामग्री की खरीद की, जिससे कि वे अपने बच्चों को ऑनलाइन शिक्षा दे पाएँ।

अभिभावकों के समक्ष बच्चों की ऑनलाइन शिक्षा में चुनौतियाँ— ऑनलाइन प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में दक्षता की कमी। 37 प्रतिशत शिक्षकों ने बताया कि कुछ बच्चे और उनके माता-पिता ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का ठीक से उपयोग नहीं कर पा रहे थे। इसके दो मुख्य कारण थे या तो उनके पास कमजोर इंटरनेट सिग्नल थे या उनको इनका इस्तेमाल करना नहीं आता था। ऐसे बच्चों ने कक्षाओं में भाग लेने में उनके लिए समस्या खड़ी की। मोबाइल टेक्नोलॉजी को इस्तेमाल में लाने वाले कौशल की कमी और अन्य तकनीकी मुद्दों के साथ डिजिटल उपकरणों और इंटरनेट तक पहुँच की कमी के कारण शिक्षकों को कुछ बच्चों के साथ ऑनलाइन नियमित कक्षाएँ स्थापित करने में भी विफलता का सामना करना पड़ा। नतीजतन, कई सरकारी स्कूलों में केवल व्हाट्सएप पाठ और वर्कशीट का ही सहारा लिया गया।

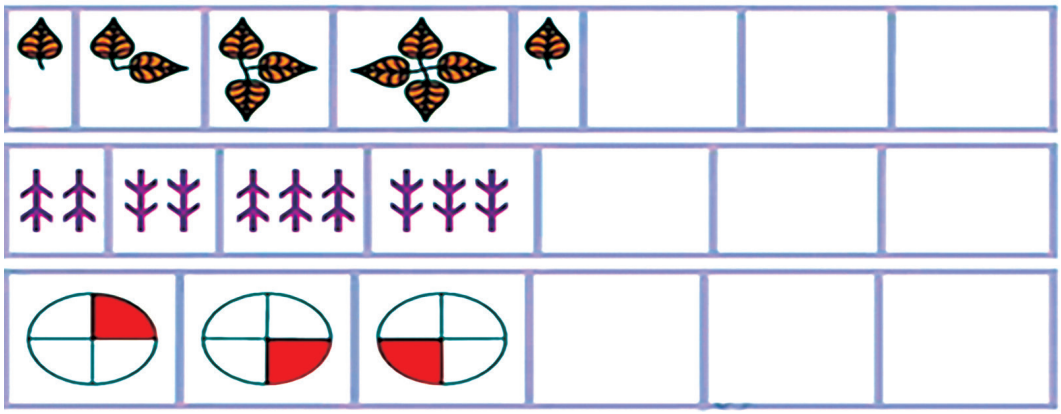

चित्र 1— पैटर्न क्रमबद्धता पर आधारित व्हाट्सएप वर्कशीट

सीमित मोबाइल डाटा/मोबाइल फोन— कुछ शिक्षकों (20 प्रतिशत) के अनुसार ऑनलाइन शिक्षण ने समावेश के बारे में सवाल उठाए। कुछ बच्चों के घरों में केवल एक मोबाइल फोन था और वह भी उनके भाई-बहनों द्वारा साझा किया जाता था। यही कारण था कि इन बच्चों को कक्षा में अनुपस्थित रहना पड़ता था क्योंकि क्लास के दौरान उनके पास मोबाइल फोन तक पहुँच नहीं थी।

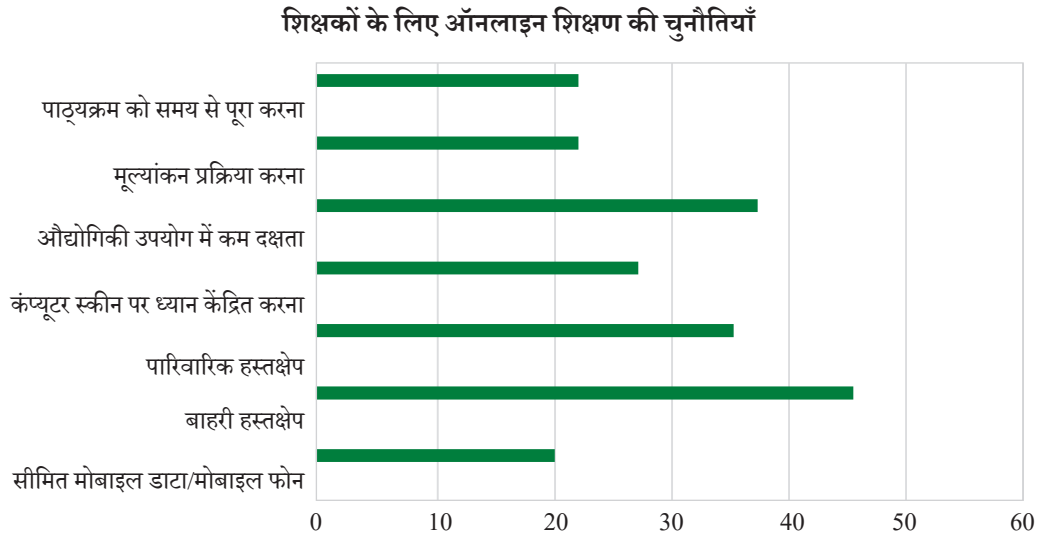

आरेख 1— ऑनलाइन शिक्षा में शिक्षकों के सामने चुनौतियाँ

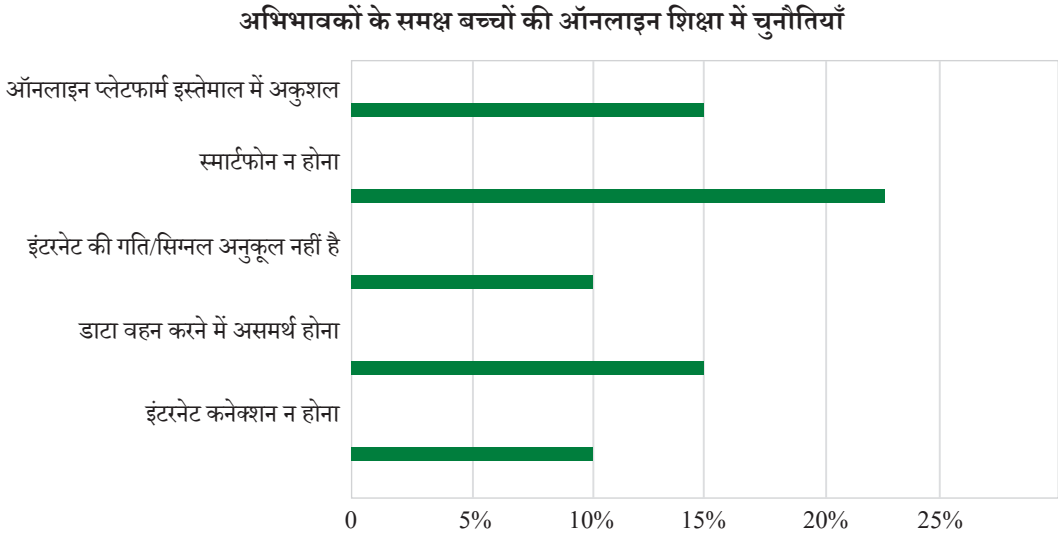

अभिभावकों के समक्ष बच्चों की ऑनलाइन शिक्षा में चुनौतियाँ

आरेख 2— ऑनलाइन शिक्षा में अभिभावकों के सामने चुनौतियाँ

कुछ बच्चों के माता-पिता कामकाजी दिनों में अपने साथ मोबाइल लेकर जाते थे। नतीजतन, कुछ स्कूलों में ऐसे बच्चों को कक्षा में भाग दिलवाने के लिए शाम या रात में भी कक्षाएँ ली गईं। इसके अलावा सीमित इंटरनेट डाटा के कारण बच्चे बाद की कक्षाओं में उपस्थित नहीं हो पा रहे थे। कुछ माता-पिता ने कहा कि वे वीडियो मोड पर नहीं डाल रहे थे, क्योंकि उनके पास सीमित डाटा था।

अभिभावकों के समक्ष बच्चों की ऑनलाइन शिक्षा में चुनौतियाँ भी शिक्षकों के विचारों की पुष्टि करती हैं। शिक्षा में निवेश करने के लिए परिवारों की आर्थिक क्षमता ने स्कूल बंद होने के दौरान शिक्षा तक उनके अपने बच्चों की ऑनलाइन शिक्षा तक पहुँच को निर्धारित किया, लगभग 24 प्रतिशत ने स्मार्टफोन की खरीद की और 38 प्रतिशत ने महामारी के दौरान अन्य शैक्षिक सामग्री की खरीद की, जिससे कि वह अपने बच्चों की ऑनलाइन शिक्षा करा पाए। 22 प्रतिशत अभिभावकों के पास सीमित मोबाइल फोन थे इनमे से 13 प्रतिशत ने पूर्व-प्राथमिक कक्षा में पढ़ने वाले अपने बच्चों की शिक्षा के बजाय अपने बड़ी कक्षाओं में शिक्षा पाने वाले बच्चों को स्मार्टफोन देना, ऑनलाइन कक्षा के लिए उचित समझा। यानि कि सीमित आय वाले, कार्यस्थल पर मोबाइल फोन साथ ले जा रहे नौकरीपेशा अभिभावकों और एक से अधिक बच्चों वाले अभिभावकों के बच्चे उपकरण या अन्य सुविधा उपलब्ध न होने के कारण इसमें प्रभावित हुए। यहाँ शिक्षकों के कुछ प्रतिबिंबों के अंश दिए गए हैं जो उनके सामने आने वाली चुनौतियों की ओर इशारा करते हैं—

शिक्षक 1

बच्चे अपने शिक्षकों और सहपाठियों से व्यक्तिगत रूप से नहीं मिल पा रहे हैं। ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान, चूँकि शिक्षकों के लिए प्रत्एक बच्चे पर अपनी नजर रखना संभव नहीं है, इसने बच्चों को विचलित और सुस्त बना दिया है। आदर्श रूप से, जब कोई बच्चा पहली बार स्कूल में आता है, तो वह घर के सुकून वाले क्षेत्र को छोड़ कर स्कूल में नए वातावरण में आता है धीरे-धीरे वह स्कूल में भी समायोजित हो जाता है। यह तब होता है जब बच्चा अपने शिक्षक के निर्देशों पर विचार करना शुरू करता है और इसलिए सीखने-सिखाने की प्रक्रिया शुरू होती है, लेकिन अगर हम पूर्व-प्राथमिक बच्चों की ऑनलाइन पढ़ाई की बात करें तो कई बच्चे ने शिक्षक द्वारा सिखाई जा रही बातों में शायद ही रुचि लेते हैं। बल्कि, वे अपने स्मार्टफोन/लैपटॉप में कई अन्य गतिविधियों में शामिल हो जाते हैं, जैसे— गेम खेलना या कार्टून देखना आदि।

इसके अलावा ऑनलाइन कक्षाओं का बच्चों के स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ता है, कुछ बच्चों को आँखों की रोशनी संबंधित समस्या का सामना करना पड़ता है, जबकि अन्य ने सिरदर्द की शिकायत की। साथ ही, बच्चों का समाजीकरण ठीक से नहीं हो रहा, क्योंकि उन्हें अपने साथियों के साथ बातचीत करने का अवसर नहीं मिल रहा है।

शिक्षक 2

महामारी के डर के कारण बच्चे तनाव और चिंता जैसी भावनाओं की नकारात्मकता से ग्रसित हो गए हैं। चूँकि बच्चे हर समय घर पर रहते हैं, इसलिए उनका वातावरण लगभग स्थिर रहा है, जिससे उनके मानसिक स्वास्थ्य, समाजीकरण और शारीरिक विकास पर असर पड़ा है। घर पर बच्चों की देखभाल करने वाली ज्यादातर माताएँ होती हैं, लेकिन कामकाजी माताओं के मामले में हर समय बच्चों की निगरानी करना बहुत मुश्किल होता है। इसलिए कामकाजी माताओं के बच्चों पर भी इसका ज्यादा प्रभाव पड़ा है।

शिक्षक 3

भारतीय आबादी के केवल एक छोटे-से हिस्से के पास ऑनलाइन शिक्षा तक की पहुँच है। बाधित बिजली आपूर्ति, कमजोर या गैर-मौजूद इंटरनेट कनेक्टिविटी, और आवश्यक उपकरणों को खरीदने में असमर्थता प्रमुख चिंताएँ हैं। मेरी 50 बच्चों की कक्षा में, दो महीने की ऑनलाइन कक्षाओं के अंतराल में मैंने यह देखा कि लगभग 21 बच्चे नियमित रूप से कक्षा में आते हैं। लगभग 25 बच्चे आज तक पूरी तरह से अनुपस्थित हैं और बाकी में उतार-चढ़ाव है। लगभग 3–4 बच्चे हैं कि वे किसी न किसी कारण से कक्षा के बीच में आते-जाते रहते हैं।

शिक्षक 4

बच्चों को ऑनलाइन मोड में शामिल करना एक निराशाजनक अनुभव है। मेरे और बच्चों के दोनों ही सिरों पर नेटवर्क के मुद्दे हैं। इंटरनेट जुड़ाव (कनेक्टिविटी) और उपकरण उपलब्धता के मुद्दों से निपटने के लिए मैंने एक और तरीका अपनाया। यहाँ तक कि कुछ कक्षाओं में मैंने अपने शिक्षण के हिस्से के रूप में 'कक्षाएँ' व्हाट्सएप या यूट्यूब पर मेरे द्वारा वीडियो साझा करने के माध्यम से लीं, ताकि बच्चे उन्हें अपनी सुविधानुसार देख सकें। हालाँकि,

टेलीविजन पर प्रसारित पूर्व-रिकॉर्डेड सत्रों (जैसे—स्वयं प्रभा, डीटीएच चैनल) और रेडियो (ऑडियो पाठ, ऑल इंडिया रेडियो) के बारे में भी यही सच है, कि वे ऐसे बच्चों की जरूरतों को पूरा करते हैं, जो लाइव ऑनलाइन कक्षाओं का लाभ नहीं उठा सकते हैं। सीमित आजीविका वाले परिवारों में, अक्सर अवसर न होने का सबसे ज्यादा असर आमतौर पर बालिकाओं और परिवार में पूर्व-प्राथमिक बच्चे की शिक्षा पर असर करता है, क्योंकि उनके सीखने को बहुत अधिक मूल्य नहीं दिया जाता है। यह प्रभाव पाठों को समझने में कठिनाइयाँ लाता है और रटकर सीखने की प्रवृति को बढ़ावा देता है।

शिक्षक 5

अपने शुरुआती सत्रों के दौरान, मैंने देखा कि कुछ बच्चे निष्क्रिय शिक्षार्थी थे। वे ज्यादा भाग नहीं लेते थे, यहाँ तक कि मैं अक्सर उन्हें ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करता था। इसके अलावा मैं जब भी कुछ बच्चों को उनके नाम से पुकारता तो वे हकलाने लगते या भ्रमित होने लगते। जब मैंने इसके पीछे के कारण का पता लगाया तो पाया कि ऑनलाइन कक्षा में आत्मविश्वास की कमी के कारण ये बच्चे कक्षा में प्रभावी रूप से भाग नहीं ले पाएँगे। कुछ बच्चे ऐसे भी थे जो पूरी कक्षा में चुप रहे। कुछ मौकों पर, मैंने कुछ बच्चों को नाम से बुलाया, और उन्होंने एक भी शब्द नहीं कहा, भले ही वे समय पर कक्षा में शामिल हो गए थे। अक्सर बच्चे ऑनलाइन क्लास के दौरान एक स्क्रीन के सामने स्थिर बैठकर थक जाते हैं, जो कक्षा में बच्चों की निष्क्रियता का कारण हो सकता है। मैंने उन बच्चों का सर्वेक्षण किया, जहाँ मैंने उनसे ऑनलाइन कक्षाओं के संबंध में उनके अनुभव के बारे में पूछा, और उनमें से अधिकांश में स्क्रीन के लंबे उपयोग के कारण सिरदर्द/आँखों में खिंचाव की समस्या शामिल थी। बच्चों में से एक ने मुझे व्यक्तिगत रूप से बताया कि वह वीडियो नहीं खोलना चाहता क्योंकि उसका घर बहुत जर्जर है। वह नहीं चाहता था कि दूसरे बच्चे इसे देखें।

शिक्षकों द्वारा की गई कुछ पहलों का वर्णन

ऑनलाइन शिक्षण के दौरान कई पूर्व-स्कूली शिक्षकों ने देखा कि घर पर होने के कारण बच्चे ऑनलाइन कक्षा शिक्षण से आसानी से विचलित हो जाते हैं। कुछ शिक्षकों ने तो यहाँ तक कह दिया कि उन्होंने कई बार अपना धैर्य खो दिया है। जब शिक्षक कक्षा ले रहा था, तब कुछ बच्चे तरह-तरह की शिकायत लगाते, जैसे कि "उसने मेरी पेंसिल ले ली है; या वॉशरूम या पानी के ब्रेक के लिए पूछना।" इस प्रकार, कक्षा गतिविधि का क्रम टूट जाता था। प्रारंभ में, उन्हें किसी भी प्रकार की ऑनलाइन कक्षा गतिविधि में शामिल करना एक चुनौती लग रहा था। उन्हें लगा कि बच्चों को कंप्यूटर/मोबाइल की स्क्रीन से भरपूर ब्रेक देना जरूरी है। उनके दिमाग और शरीर को तरो-ताजगी और सीखने की जागरूकता की रणनीतियों में से तैयार करने का यह एक अद्भुत तरीका हो सकता है।

एक शिक्षक के शब्दों में दुविधा को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है "एक माता-पिता ने अनौपचारिक ऑनलाइन बैठकों के दौरान बताया कि उनका बेटा ऑनलाइन खेल ही पसंद कर रहा था और कक्षा के दौरान भी इस प्रकार के खेल ही खेलना चाहता था। एक अन्य पिता ने कहा कि उनके बच्चे को अब चित्र

पढ़ना पसंद नहीं है और वीडियो गेम खेलना पसंद है।" इस तरह के बच्चों के व्यवहारों की सूची अधिक से अधिक लंबी हो सकती है। मुद्दे विविध थे, लेकिन प्रत्येक माता-पिता ने मुझे प्रत्याशा के साथ देखा, जैसे कि मेरे पास एक जादू की छड़ी थी जो सब कुछ ठीक कर सकती थी। माता-पिता की बेबसी उनके शब्दों में साफ-साफ जाहिर हो रही थी।

गतिविधियों के माध्यम से सिखाई गई अवधारणाएँ

ऑनलाइन उत्सव मनाना और कहानी सुनाना

कुछ शिक्षकों ने ऑनलाइन उत्सव मनाए जैसे कि माताओं का दिन (मदर्स डे), पिताओं का दिन (फादर्स डे), पालतू जानवर का दिन आदि। इन गतिविधियों ने बच्चों को बोलने के लिए प्रेरित किया और एक तरह से बातचीत के अवसर दिए। कुछ शिक्षकों ने बाल साहित्य के विभिन्न स्रोतों से कई कहानियों की पहचान की जो बच्चों के अपने जीवन, परिवेश, घटनाओं या कल्पना से संबंधित हो सकते थे। कहानियों को उम्र की उपयुक्तता, शिक्षार्थियों की पृष्ठभूमि और सिखाई जाने वाली अवधारणाओं को ध्यान में रखते हुए चुना गया था। कहानियों का उपयोग सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने की भाषा दक्षताओं को विकसित करने के लिए किया जाता था। कहानियों को ऑनलाइन सुनाया गया और निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखा गया—

- कक्षा की गतिविधियों में बच्चों की रुचि बनाए रखने के लिए, शिक्षकों ने यह सुनिश्चित करने के लिए कि बच्चे सुन रहे थे, उनसे कहानियों के बीच में प्रश्न पूछे जैसे कि वह "क्या सोचते हैं कि कहानी में आगे क्या होगा?" या "राजू की बहन का नाम क्या था?"
- कठपुतली, मास्क, पिक्चर कार्ड और पोस्टर प्रदर्शन जैसी कई तरह की कहानी कहने की तकनीकों का इस्तेमाल किया गया।

चित्र 2— पिक्चर कार्ड्स के द्वारा कहानी सुनते बच्चे

फिर उन्हें कहानी के अंत की भविष्यवाणी करने के लिए कहा गया। कहानी सुनाने के बाद बच्चों से पूछा गया "आप कहानी के अंत को कैसे बदलना चाहेंगे? क्या आपको लगता है कि कहानी में कुछ और होना चाहिए था? आपको ऐसा क्यों लगता है?" प्रत्येक कहानी से पता चलता है कि उनके बोलने के कौशल विकसित हो रहे थे, बच्चे अनुवर्ती प्रश्नों का उत्तर देने में सक्षम थे। शुरू में उन्होंने कुछ वाक्यों में जवाब दिया लेकिन बाद में वे पूरी कहानी सुनाने में सक्षम हो गए। यह देखा गया कि बच्चों ने बोलने की गतिविधियों में भाग लिया और उन्होंने अपने समूह के सदस्यों को कहानियाँ सुनाईं। उन्होंने भावनाओं के साथ खुद को व्यक्त करना भी सीखा। ऐसे उदाहरण भी थे जब बच्चे कहानी के बारे में चर्चा में लगे हुए थे कि "हमें तितलियाँ क्यों नहीं पकड़नी चाहिए और फूल क्यों नहीं तोड़ने चाहिए? हम अपने समाज के लिए कैसे मददगार साबित हो सकते हैं?"

कहानी कहने के अनुभव ने ऑनलाइन कक्षा गतिविधियों में बच्चों की भागीदारी को बढ़ाया। इन ऑनलाइन कक्षाओं में शिक्षकों द्वारा कई कारणों से कहानियों का उपयोग किया गया था, जैसे कि एक विषय/अवधारणा का परिचय देना या एक संदर्भ बनाना या एक अवधारणा को पेश करने से पहले ऑनलाइन कक्षाओं में शिक्षार्थियों के मौजूदा ज्ञान का पता लगाना। माता-पिता की प्रतिक्रिया से पता

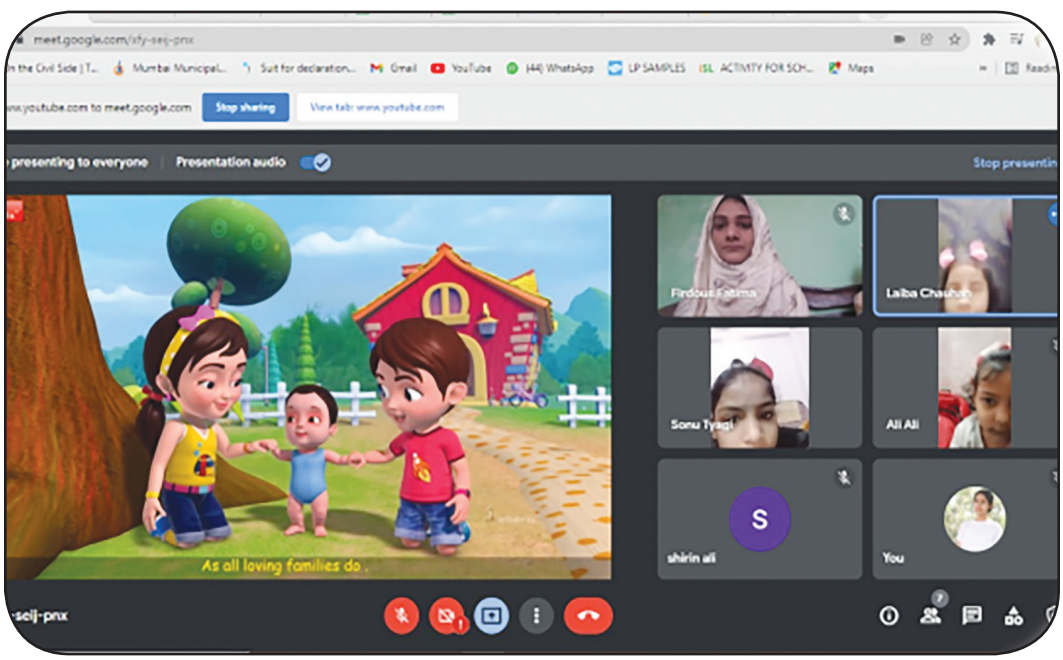

चित्र 3— ऑनलाइन शिक्षा में कार्टून कहानी सुनते हुए बच्चे

चला कि ऑनलाइन कक्षाओं में कहानी सुनाना और उस पर बातचीत करना बच्चों को एकाग्र रखने में अत्यधिक प्रभावशाली था। कुछ अध्यापकों ने यह भी महसूस किया कि भाषा की समझ में और बच्चों को समझने में भी कहानी कथन अधिक सकारात्मक परिणाम लाया।

कभी-कभी बच्चों को मास्क बनाना और पेपर क्राफ्ट करना सिखाया जाता था और फिर उन्होंने कहानी सुनाने के लिए ऑनलाइन क्लास में उपलब्ध मास्क या पेपर क्राफ्ट आइटम का भी इस्तेमाल किया। इन सत्रों में कठपुतली या मुखौटा बनाने और इन प्रॉप्स को पहनने तथा उपयोग करने के तरीके के बारे में कुछ विचार साझा किए गए। बच्चों ने पेपर-बैग कठपुतली भी बनाई। कई चित्र कार्डस का उपयोग करके, बच्चों ने अपनी कहानियाँ खुद बनाईं। उन्होंने कहानी में पात्रों का नाम दिया, चित्र कार्ड के आधार पर एक संदर्भ के बारे में सोचा और फिर विभिन्न पात्रों के बीच बातचीत/संवाद बोले। इससे उनके बोलने के भाव में निखार आया। रंगीन वर्कशीट का उपयोग करके कक्षाओं को भी रोचक बनाया गया, जिससे बच्चों ने कक्षा में सक्रिय रूप से भाग लिया। शिक्षकों ने यह देखा कि कहानी वर्णन के दौरान आपस में अवांछित शिकायतों या वार्ताओं की संख्या बहुत ही कम थी।

स्वस्थ भोजन की आदतें और स्वच्छता

एक और गतिविधि जो बच्चों के लिए बहुत दिलचस्प थी, वह थी ऑनलाइन कक्षा के दौरान स्वस्थ प्लेट का वर्गीकरण। बच्चों ने एक ऑनलाइन गतिविधि के माध्यम से सीखा कि कैसे सभी पोषक तत्वों के साथ एक संतुलित आहार प्राप्त करने के लिए, एक स्वस्थ प्लेट को इकट्ठा किया जाए। यानि कि ऐसा संतुलित आहार जिसे हर दिन खाने की आवश्यकता होती है। उन्होंने कुछ आग रहित खाना पकाने के व्यंजनों के साथ भी हाथ आजमाया। अच्छे टेबल मैनर्स सिखाए गए। इसके आगे की कार्रवाई के रूप में बच्चों ने विभिन्न सामग्रियों का उपयोग करके, स्वयं सलाद और शरबत बनाए और उन्हें परोसा।

गरम बर्तन रखने के लिए टिकली (कोस्टर) बनाना भी बच्चों को सिखाया गया। इस प्रकार की रचनात्मक गतिविधियों से ऑनलाइन कक्षाओं को बच्चों के लिए रोचक बनाया।

मैं जिम्मेदार हूँ

ऑनलाइन सत्रों में ऐसी गतिविधियाँ शामिल थीं, जैसे कि अपने खिलौनों को कैसे साफ करें? अपने कपड़ों को कैसे मोड़ें? और उन्हें बड़े करीने से व्यवस्थित करें, किसी भी छुट्टी के लिए अपना बैग कैसे पैक करें? शिक्षकों ने सुनिश्चित किया कि छात्र जिम्मेदार, स्वतंत्र और आत्मविश्वासी होने का महत्व समझें।

सहानुभूति की भावना को प्रोत्साहित करने के लिए, बच्चों को पुराने अखबार से रैपिंग पेपर तैयार करना सिखाया गया। वंचितों को उपहार में देने के लिए इसमें पेंसिल, कलम जैसे छोटे उपहार लपेटे।

छात्रों ने अखबार के बैग बनाना सीखा और विभिन्न कला तकनीकों का उपयोग करके इसे सजाया।

मैं साहसी हूँ

छात्रों को अपने कार्यों का स्वामित्व लेना सिखाया गया और उन्हें 'माफ करना', 'धन्यवाद' आदि जैसे जादुई शब्द इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। उन्होंने अपने प्रियजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए एक आभार पत्रिका बनाई। उन्होंने पेपर बैग कठपुतली बनाई और सीमाओं पर काबू पाने के अपने अनुभव साझा किए।

शिक्षकों ने अपने संवेगों की सीमाओं पर काबू पाने के अपने अनुभव साझा किए। छात्रों को अपने कार्यों का स्वामित्व लेना सिखाया गया और उन्हें 'माफ करना', 'धन्यवाद' आदि जैसे जादुई शब्द इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। उन्होंने अपने प्रियजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए एक आभार पत्रिका बनाई। उन्होंने पेपर-बैग कठपुतली बनाई और उसके द्वारा अपने प्रियजनों को आभार व्यक्त किए।

निष्कर्ष

इस शोध अध्ययन का उद्देश्य पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों की सीखने की प्रक्रिया पर कोविड-19 के प्रभावों के बारे में जानना था। कोविड-19 की प्रतिक्रिया ने प्रदर्शित किया है कि कैसे प्रौद्योगिकी बेहतरी के लिए शिक्षा प्रक्रिया को बदलने में मदद कर सकती है। आज हमारे सामने उभर रही चिंताओं में से एक बड़ी चिंता ऑनलाइन शिक्षा संसाधनों तक सभी की समान पहुँच के बारे में है, क्योंकि सबसे कमजोर सामाजिक समूहों के बच्चों का हमें इस संदर्भ में ध्यान रखना होगा। कोविड-19 के दौरान न केवल छात्र बल्कि शिक्षक भी ऑनलाइन शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया से प्रभावित हुए, क्योंकि उनमें से कई के पास आवश्यक रूप से उपयुक्त कौशल नहीं थे।

राष्ट्रीय शिक्षा निति (2020) में उल्लिखित आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए केवल इतना करना ही पर्याप्त नहीं था। *राष्ट्रीय शिक्षा निति 2020* सामाजिक या आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना सभी शिक्षार्थियों के लिए उच्चतम गुणवत्ता वाली शिक्षा तक समान पहुँच का उल्लेख करती है। ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म्स की शुरुआत के साथ शैक्षिक प्रावधान सीमित हैं। इसके परिणामस्वरूप ऑनलाइन शैक्षणिक नमूने के सफल होने के लिए, मूलभूत पहलुओं पर ध्यान देना, जैसे— जैसे कि तकनीकी संसाधनों की खरीद के लिए परिवारों को ऋण प्रदान करना, शिक्षक प्रशिक्षण और शिक्षा के इस नए रूप के लिए छात्र अनुकूलन। डिजिटल डिवाइड की पहचान इन सामाजिक असमानताओं को पैदा करने वाले कारकों में से एक के रूप में की जाती है, क्योंकि न केवल शिक्षकों बल्कि अभिभावकों के लिए भी उपकरणों और तकनीकी उपकरणों की उपयोगिता के बारे में प्रशिक्षण और सामान्य ज्ञान को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

संदर्भ

अरोरा, एस.पी. चौधरी और आर.के. सिंह. 2021. इंपैक्ट ऑफ कोरोना वायरस एंड ऑनलाइन एग्जाम एंग्जायटी ऑन सेल्फ-एफिकैसय : द मोढेराटिंग रोल ऑफ कोपिंग स्ट्रेटेजी. *इंटरैक्ट ऐकोनोल स्मार्ट एडूक अहेड-ऑफ-प्रिंट.* https://doi.org/10.1108/ITSE-08-2020-0158

कुमार, ए.के.आर. नायर और एल.डी. भट. 2020. डिबेट : कोविद-19 एंड चिल्ड्रन इन इंडिया. *चाइल्ड अडोलेस मेंटल हेल्थ.* 25(3) : 1. पृ.सं. 65–166. https://doi.org/ 10.1111/camh.12398

केकोविक, ए.,सी.एच. बस्छ, एम. सुल्लिवन, एन.के. दवे. 2020. द इंपैक्ट ऑफ द कोविड-19 एपिडेमिक ऑन मेंटल हेल्थ ऑफ अंडरग्रेजुएट स्टूडेंट्स इन न्यू जर्सी, क्रॉस-सेक्शनल स्टडी. *प्लोस वॉन* 15(9 September):e0239696. https://doi.org/10.1371/journal.pone.0239696

गैलो, एल.ए., टी.एफ. गैलो, एस.एल. यंग, के.एम. मोरित्ज और एल.के. अकीसों. 2020. द इंपैक्ट ऑफ आइसोलेशन मेसर्स टू कोविड-19 ओन एनर्जी इंटेक एंड फिजिकल एक्टिविटी लेवल्स इन ऑस्ट्रेलियन यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स. *पबमेड सैंट्रल.* https://doi.org/10.1101/2020.05.10.20076414.

चरिस्सी, ए., ई. टैंपा और वी. करविदा. 2020. इंपैक्ट ऑफ द कोविड-19 डिसरप्शन ओन यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स' पर्सेप्शंस एंड बिहेवियर. *यूरोपियन जर्नल ऑफ एडुकेशन स्टडीज.* 7(11). https://doi.org/10.46827/ejes.v7i11.3348

चेंग, एल. और सी.व्हाई. लम. 2021. द वर्स्ट इज्ज एट टू कम : द साइकोलॉजिकल इंपैक्ट ऑफ कोविड-19 ओन होंग कोंग म्यूजिक टीचर्स. *म्यूजिक एडूक रेस.* 23, पृ.सं. 211–224. https://doi.org/10.1080/14613808.2021.1906215.

यूनेस्को. 2015. *एजुकेशन फॉर आल ग्लोबल मॉनिटरिंग रिपोर्ट* (इश्यू मई).

———. 2020. *ग्लोबल एजुकेशन मीटिंग एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी सेशन ऑन एजुकेशन पोस्ट-कोविड-19 बैकग्राउंड डॉक्यूमेंट.* https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000375301

राकिक, एस., टी. लोलिक, बी. ललिक, डी. स्टेफनोविक और यू. मार्जानोविक. 2020. द एक्सेप्टेंट ऑफ इलेक्ट्रॉनिक लर्निंग इन ट्रांजीशन एकनॉमिस : एविडेन्स फ्रॉम द रिपब्लिक ऑफ सर्बिआ. *आई.सी.ई.टी. 2020–18th आई.ई.ई.ई. इंटरनेशनल कांफ्रेंस ओन इमर्जिंग ईलर्निंग टेक्नोलॉजीज एंड एप्लिकेशंस, प्रोसीडिंग्स.*

https://doi.org/10.1109/ICETA51985.2020.9379173

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

शीन., ए., जी. रो, के. होलानी, ए.सी. जकारकिम, पी.डी. सांतोस, एफ. कागदकार और एम. जेशन. 2020. 51.7 इंपैक्ट ऑफ कोविड-19– रिलेटेड स्कूल क्लोजर ओन चिल्ड्रन एंड एडोलैसैंट्स वर्ल्डवाइड : ए लिटरेचर रिव्यु. *जे एम अकैड चाइल्ड एडोलेस साइकाइट्री.* 59(10), पृ.सं. S253. https://doi.org/10.1016/j.jaac.2020.08.417

स्निपेस, जे. और एल. ट्रेन. 2017. ग्रोथ माइंडसेट, परफॉरमेंस अवोइडेन्स एंड अकादमिक बेहवियर्स इन क्लार्क काउंटी स्कूल डिस्ट्रिक्ट. रीजनल एजुकेशनल लेबोरेटरी वेस्ट. अप्रैल, पृ.सं. 1–34. http://ezphost.dur.ac.uk/login?url=https://search.proquest.com/docview/1913348385?accountid=14533%0Ahttp://openurl.ac.uk/ukfed:dur.ac.uk?genre=report&issn=&title=Growth+Mindset%2C+Performance+Avoidance%2C+and+Academic+Behaviors+in+Clark+County+School+Dist